भूमण्डलीकरण का कुरमी/महतो महिलाओं के जन–जीवन पर प्रभाव

ममता कुमारी, शोध छात्रा, समाजशास्त्र विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची
डा. सुरेन्द्र पांडे, असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोध सार

'झारखण्ड में कुरमी/महतो (पिछड़ी जाति) की महिलाओं के जीवन व उनकी अर्थव्यवस्था पर न सिर्फ भूण्मडलीकरण का बल्कि औद्योगिकरण, आधुनिक शिक्षा तथा वैज्ञानिक तकनीकी का भी काफी प्रभाव पड़ा है। भूमण्डलीकरण से पिछड़ी जाति के परिवारों के सामाजिक एवं आर्थिक जीवन पर जहां एंक ओर सकारात्मक प्रभाव पडा है तो वहीं दूसारी ओर इसका नकारात्मक प्रभाव एवं इनमें सामाजिक विघटन भी देखने को मिलता है। सकारात्मक प्रभाव के कारण पिछड़ी जाति समाजों में सामाजिक एवं आर्थिक विकास की गति तीव्र हुई है, वहीं नकारात्मक प्रभाव के कारण पिछड़ी जाति समाजों में शोषण उत्पीड़न एवं स्वास्थ्य की समस्या उत्पन्न हो गई है।

विषय संकेत *: कुरमी/महतो महिलाएं, पिछड़ी जाति, भूण्मडलीकरण, औद्योगिकरण, शिक्षा, वैज्ञानिक तकनीक*

परिचय

भूण्मडलीकरण से पिछड़ी जाति परम्परागत अर्थव्यवस्था में सकारात्मक परिवर्तन आया है। पिछड़ी जाति ने अपने आर्थिक जीवन में आधुनिक अर्थव्यवस्था के नये पहलुओं को इस तरह अंगीकार कर लिया है कि उनकी परम्पागत अर्थव्यवस्था कहीं–कहीं पर विलुप्त होती नजर आती है। स्थानांतरित कृषि को स्थायी कृषि में परिवर्तन काफी जोर पकड़ता जा रहा है। जंगलों की कटाई तथा इससे उत्पन्न परिस्थितिकी असंतुलन का पिछड़ी जाति परम्परागत शिकार की गतिविधियों पर प्रतिकुल प्रभाव पड़ा है। कृषि के परम्पागत तरीके अब कही–कहीं वैज्ञानिक उपकरणों तथा प्रविधियों के द्वारा विस्थापित हो रहे हैं, किन्तु मिट्टी की उर्वरता में कमी पर्याप्त पूँजी का अभाव तथा सिंचाई सुविधा की अपर्याप्तता के कारण कृषि उत्पादन की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। आज पिछड़ी जाति अर्थव्यवस्था संक्रमण के दौर में है, पुरानी पिछड़ी जाति अर्थव्यवस्था

धीरे–धीरे टूट रही है तथा नयी अर्थव्यवस्था अब तक कोई विशिष्ट आकार नहीं ले सकी है। वही समुन्नत कृषि गैर परम्परागत कुटीर उद्योगों, उच्च जीवन स्तर, स्वास्थ्य तथा स्वच्छता पर बढ़ता जोर न केवल उत्पादन के परम्परागत प्रविधियों में परिवर्तन लाया है, बल्कि पिछड़ी जाति लोगों की मनोवृत्तियों तथा जीवन पद्धति में भी बदलाव आया है। किसी देश का पूरे विश्व की विचारधारा की दिशा में ढलना ही भूमण्डलीकरण है। विकसित राष्ट्रों की दृष्टि से भूमण्डलीकरण की परिभाषा इस प्रकार है – ''भूमण्लीकरण से तात्पर्य है उन सीमाओं को समाप्त करने से है जो देश के आर्थिक विकास में बाधक है।'' इसके द्वारा प्रत्येक देश चाहे वह विकसित है या विकास की अवस्था में है दूसरे देशों तक प्रत्येक देश चाहे वह विकसित है या विकास की अवस्था में है दूसरे देशों तक अपनी सहज पहुँच बना सकेगा जिससे द्वारा निर्धन राष्ट्र धन राष्ट्रों के बाजार तक पहुँच सकेंगे और धनी देश उसके बदले में गरीब देशों के बाजार तक अपनी पहुँच बढ़ा सकेंगे। अतः भूमण्डलीकरण का अर्थ पूरे विश्व को एक वैश्विक वित्तीय गाँव बनाना है।

भूमंडलीकरण

सामाजिक परिवर्तन की प्रकिया ने आज एक स्थान को पूरे विश्व का प्रतिनिधि बना दिया है। पिछले कुछ दशकों में संचार साधनों, सूचना तकनीकी एवं यातायात के साधनों के विकास ने स्थानीय एवं वैश्वीय लोगों को एक सूत्र में बांध दिया है। '' यह प्रक्रिया जिससे दुनिया भर के सामाजिक संबंधों में घनिष्ठता निकटता आ गई है, भूमंडलीकरण कहलाती है।'' भूमंडलीकरण को एक निंरतर प्रक्रिया के रूप में वर्णित किया जा सकता है। राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का विदेशी अर्थव्यवस्था से व्यापार, विदेशी–निवेश, पूंजी – प्रवाह तथा प्रौद्योगिकी के विस्तार द्वारा संबंधित होना ही भूमंडलीकरण कहलाती है। सामान्यतः भूमंडलीक़रण किसी भी प्रकार के आर्थिक, तकनीकी सामाजिक– सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं जैविकीय तथ्यों के किसी भी प्रकार से सम्मिलित होने की प्रक्रिया है। ''भूमंडलीकरण से तात्पर्य उन सीमाओं को समाप्त करने से है जो देश के आर्थिक विकास में बाधक है''। इसके द्वारा प्रत्येक छोटा–बड़ा देश चाहे वह विकसित है या विकास की अवस्था में दूसरे देशों तक अपनी सहज पहुंच बना सकेगा जिसके द्वारा निर्धन राष्ट्र धनी राष्ट्रों के बाजार तक पहुँच सकेंगे और धनी देश उसके बदले में गरीब देशों के बाजार तक अपनी पहुंच बढ़ा सकेंगे।

अतः भूमंडलीकरण का अर्थ पूरे विश्व को एक वैश्विक वित्तीय गांव बनाना है।

भूमंडलीकरण का सकारात्मक प्रभाव

जहाँ तक राँची नगर के कुरमी/महतो (पिछड़ी जाति) की महिलाओं में आज सामाजिक एवं आर्थिक जीवन पर भूण्मडलीकरण का प्रभाव की बात है तो पिछड़ी जाति समाज में सामाजिक व्यवहार प्रतिमान तथा सोच में भी भूण्मडलीकरण का प्रभाव परिलक्षित होने लगा है। पिछड़ी जाति पर्व–त्योहार के प्रभावों से अछूता नहीं रहा है, सूचना क्रांति का संवाहक मोबाईल फोन का प्रयोग शहरी एवं ग्रामीण पिछड़ी जाति समाज में आम बात हो गई है। ग्रामीण पिछड़ी जाति छात्र–छात्रायें मोबाईल फोन का व्यापक स्तर पर प्रयोग कर रहे हैं, जिसके कारण उनके सामाजिक सम्पक्र का दायरा विस्तृत हो चला है, उनके बीच संचार क्रांति ने युगान्तकारी सामाजिक–आर्थिक परिवर्तनों को अंजाम दिया है। जिसके कारण इनके जीवनशैली में वैश्वीकता का समावेश होने लगा है।

कुरमी/महतो समाज की अपनी सामाजिक व्यवस्था रही है। यह समाज नातेदारी पर आधारित समाज होता है। समाज के सदस्य परिवार, वंश, गोत्र, उपपिछड़ी जाति या पिछड़ी जाति के रूप में साथ–साथ रहते हैं, ये लोग पारस्परिकता के आाधार पर अपनी सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखते हैं, इन समाजों में आर्थिक व्यवस्था, धार्मिक व्यवस्था का ही अंग माना जाता है। ये लोग सुख–दुःख साथ–साथ भोगते हैं, इस प्रकार पिछड़ी जाति समाज की अपनी सामाजिक व्यवस्था रही है। भूण्मडलीकरण के फलस्वरूप पिछड़ी जाति समाज की सामाजिक व्यववस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। काम, नौकरी तथा रोजगार की तलाश में पिछड़ी जाति जनसंख्या नगर तथा औद्योगिक शहर की ओर पलायन कर रही है। कहीं–कहीं पर पूरे परिवार गाँव से आकर नगर अथवा शहर में बस गए हैं।

इनमें पहले दहेज, कीमती उपहार, दान आदि का प्रचलन नहीं था। लेकिन अब उनमें भी शादी–विवाह के अवसर पर दहेज उपहार घरेलू उपकरण, फर्नीचर आदि का आदान–प्रदान होता है। इस प्रकार आज वैश्वीक युग के आने से कुरमी/महतो ;पिछड़ी जातिद्ध की महिलाओं के जीवन पर प्रभाव पड़ा है और परंपरागत सामाजिक व्यवस्था टूट रही है तथा उसके स्थान पर आधुनिक व्यवस्था स्थापित की जा रही है। आज पिछड़ी जाति समाजों में परंपरागत सामाजिक व्यवस्था के स्थान पर आधुनिक सामाजिक व्यवस्था स्थापित की जा रही है।

''भूण्मडलीकरण का प्रभाव कुरमी/महतो ;पिछड़ी जाति द्ध के वस्त्र एवं आभूषण पर भी पड़ा है। ''शहर तथा नगर समाज के सदस्यों के संपक्र में आने से इनमें भी कीमती आभूषणों का प्रचलन बढ़ गया है, अब ये लोग भी शहर में रहकर अच्छे रूपये कमा रहे हैं, अब उनके परिवार की महिलाएँ अच्छे आभूषण के दुकानों से सोना चांदी, मोती, प्लेटिनम आदि की गहने पहन रही हैं, शहरी पिछड़ी जाति अब सीप, घोंघा, शंख पत्थर आदि से निर्मित आभूषण धारण करना प्रतिष्ठा के खिलाफ समझा जाता है। अतः कुरमी/महतो महिलाओं में वस्त्र एवं आभूषण पर भूण्मडलीकरण का प्रभाव पड़ा है, इसका प्रभाव पिछड़ी जाति समाज के खेल एवं मनोरंजन सामग्री पर भी पड़ा है। इसका इसर इनके गृह एवं घरेलू उपकरण पर भी परिलक्षित होता जा रहा है। पिछड़ी जाति समाज के घर बाँस, लकड़ी, घास–फूस, मिट्टी खपरैल आदि के बने होते थे, इनके घर ज्यादातर एक ही तल्ले के बने होते थे, घर में अलग से रसोई घर, स्नान घर, शौचालय आदि नहीं होते थे, घर में नाली, खिड़की, बड़ा दरवाजा आदि का अभाव पाया जाता था, लेकिन आज वैश्वीक युग में आने से पिछड़ी जाति समाजों में उद्योग और नगर के संपक्र के कारण इनका गृह निर्माण का तकनीक प्रभावित हुआ है। आज इनके घरों में आधुनिक फर्नीचर मनोरंजन के साधन, खाना बनाने तथा खाने के लिए आधुनिक बरतन भी देखें जा सकते हैं।

''भूण्मडलीकरण का प्रभाव इनके शिक्षा पर भी पड़ा है। भूण्मडलीकरण के कारण ही इनमें आधुनिक शिक्षा के प्रति काफी आकर्षण हुआ है। कुरमी/महतो समाज की अर्थव्यवस्था पर भी भूण्मडलीकरण का प्रभाव पड़ा है। इनकी अर्थव्यवस्था खाद्य संकलन, शिकार, कृषि तथा दस्तकारी पर आधारित थी। लेकिन आज अर्थव्यवस्था, नौकरी, व्यापार तथा विभिन्न प्रकार के श्रमिक पर आधारित हो गई है, अब पिछड़ी जाति स्थान के पढ़े–लिखे लोग नौकरी करने नगर तथा शहर में आकर बस गए हैं।

भूण्मडलीकरण से पिछड़ी जाति के परिवारों में सामाजिक एवं आर्थिक जीवन पर नकारात्मक प्रभाव एवं सामाजिक विघटन

भूण्मडलीकरण का प्रभाव कुरमी/महतो महिला समाजों पर केवल सकारात्मक ही नहीं हुआ है बल्कि उनका नकारात्मक प्रभाव भी पिछड़ी जाति समाजों पर पड़ा है। भूण्मडलीकरण का नकारात्मक प्रभाव पिछड़ी जाति में विवाह पर पड़ा है। महिलाओं में जीवन साथी प्राप्त करने के अपने तरीके अलग होते थे, इन समाजों में वधु–मूल्य, सेवा विनियम अपहरण, परीक्षा खरीद आदि उपायों से जीवन साथी प्राप्त किया जाता

है, लेकिन भूण्मडलीकरण के आने से नगरी तथा औद्योगिक समाज के संपक्र में आने से इनमें दहेज का प्रचलन बढ़ गया है।

दहेज के माध्यम से अब जीवन साथी प्राप्त किया जा रहा है। अब पिछड़ी समाजों में भी अंर्तपिछड़ी जाति तथा अंतधार्मिक विवाहों का भी प्रचलन हो गया है। गाँव से काम करने के लिए पुरूष और महिला शहर की ओर आते हैं। शहर में रहते हुए कुछ पुरूष दुबारा विवाह कर लेते हैं। ऐसी स्थिति में घर पर रहने वाली पत्नी की हालत दिनोंदिन दयनीय होती जाती है और पारिवारिक संबंध टुटता जाता है। शहर में काम करने वाली कुछ महिलाएँ भी अपने पहले पति को छोड़कर दूसरे पुरूष के साथ विवाह कर लेती हैं। इस प्रकार भूण्मडलीकरण के सम्पक्र में आने से तथा शहरीकरण का दुष्प्रभाव विवाह पर भी पड़ा है। इस तरह आत्महत्या, दहेज, मृत्यु, तलाक आदि घटना से लगातार वृद्धि हो रही है। ''भूण्मडलीकरण का दुष्प्रभाव परिवार पर भी पड़ा है। अन्तर जाति अथवा अंतधार्मिक विवाह के कारण जो परिवार का निर्माण हो रहा है, उसकी स्वीकृति पिछड़ी जाति समाजों द्वारा नहीं मिलती है, ऐसी स्थिति में अंतरपिछड़ी जाति तथा अंतर–सामुदायिक विवाह के फलस्वरूप बनने वाले परिवार अलग–अलग पड़ते जा रहे हैं।

भूण्मडलीकरण तथा शहरीकरण के फलस्वरूप पिछड़ी जाति पिछड़ी समाजों में यौन अपराध की घटनाओं में वृद्धि हो रही है। ग्रामीण क्षेत्रों से शहर में दैनिक मजदूरी के रूप में काम करने के लिए अधिक संख्या में ठेकेदारों द्वारा महिलाओं का यौन शोषण किया जाता है। जन्म दर को नियंत्रित करने वाले साधन जैसे– गर्भ निरोधक गोली का सेवन तथा कंडोम का प्रयोग यौन शोषण तथा यौन अपराध की घटनाओं में वृद्धि के लिए जिम्मेदार है।

भूण्मडलीकरण का नाकारात्मक प्रभाव स्वास्थ्य पर भी पड़ा है। ''नगर तथा औद्योगिक शहर अस्तित्व में आ जाने के कारण पिछड़ी जाति समाज का पर्यावरण अब स्वच्छ नहीं रहा गया है, उन्हें ध्वनि प्रदूषण, वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण आदि की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

सकारात्मक प्रभाव के कारण पिछड़ी जाति समाजों में सामाजिक एवं आर्थिक विकास की गति तीव्र हुई है, वहीं नकारात्मक प्रभाव के कारण पिछड़ी जाति समाजों में शोषण उत्पीड़न एवं स्वास्थ्य की समस्या उत्पन्न हो गई है।

सुझाव

1. कुरमी / महतो महिलाओं के समाज में जागरूकता तभी आएगी जब उनमें शिक्षा का पर्याप्त विकास हो। इसके लिए सरकारी और गैर सरकारी दोनों स्तर पर प्रयास तीव्र करना होगा।
2. इन महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार हेतु परम्परागत कृषि के स्वरूप में परिवर्तन लाना होगा जिसके लिए वैज्ञानिक तरीके से खेती करने तथा उन्नत बीज एवं खाद की उचित व्यवस्था करनी होगी।
3. शिक्षा प्रगति और विकास का मूल अंग है। महिलाएँ तभी प्रगति और विकास कर सकती हैं, जबकि वे शिक्षित हों। शोध के दौरान यह पाया गया कि पिछड़ी जाति महिलाओं में शिक्षा का स्तर निम्न है। अतः आवश्यकता है ऐसे उपायों एवं कार्यक्रमों की जिससे पिछड़ी जाति महिलाएँ प्रोत्साहित होकर शिक्षा प्राप्त करने की ओर उन्मुख हों तभी उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार हो सकता है।
4. कुरमी / महतो महिलाओं में राजनीतिक चेनता का भी अभाव है। अतः इनमें राजनीतिक चेतना तथा भागीदारी बढ़ाने के लिए ग्राम स्तर पर प्रयास करना होगा।
5. इनके रहन–सहन की आदत भी पर्यावरण को प्रदूषित करती है। जैसे शौच के लिए खुले खेतों का प्रयोग करना इसे वर्जित करने के लिए प्रेरित करना होगा। शौचालयों के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए सुलभ शौचालयों एवं सामुदायिक शौचालयों का प्रचलन ग्राम स्तर पर करना होगा।
6. इन महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए स्थानीय स्तर पर पिछड़ी जाति कलाओं के प्रति झुकाव पैदा करना होगा और उससे उत्पादित वस्तुओं के लिए बिक्री केन्द्र की स्थापना करना होगा।
7. कुरमी / महतो महिलाओं में शोषण के कारणों में गरीबी, शिक्षा, बेरोजगारी और कम मजदूरी दर आदि प्रमुख हैं। इसलिए विभिन्न विभागों के सहयोग से कार्यक्रमों का सीधा लाभ पिछड़ी जाति को दिलाने का प्रयास करना चाहिए। जिससे परिवारों की वैकल्पिक आय का स्रोत मिल सके।
8. पारंपरिक व्यवसायों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
9. व्यवसाय में लगे छोटे सदस्यों को प्रशिक्षण एवं स्थानीय ग्रामीण बैंकों से ऋण दिलवाकर उनकी स्थिति मजबूत करनी चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ–सूची

1 आरमंड बोसविक एण्ड फ्रेडरिक हेकमैन, 2006, इंटिग्रेसन ऑफ माइग्रेंट्सः कंट्रीब्यूसन ऑफ लोकल एण्ड रिजनल ऑथिरिटीस्, यूरोपियन प्रेस।

2 अंगूरा सैम्यूअल, 1979, द रेषनल पीजेंट, यूनीवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, बर्केले,

3 बेयोन जॉन एण्ड स्नैपर, 2003, द इंटिग्रसन ऑफ इम्मिग्रेंट्स इन यूरोपियन सोसाइटिस्, यूरोपियन प्रेस।

4 बेक माइकल, 2005, कल्चरल इंटिग्रसन एण्ड हाइब्रिडाइजेषन एट द यू.एस. , मेक्सिकन प्रेस, मेक्सिको।

5 बेलोज सी डेविस, 1962, टूआर्डस ए थियरी ऑफ रिवोल्यूषन, अमेरिकन सोसियोलॉजिकल रिव्यू, येल यूनिवर्सिटी प्रेस, येल।

6 बेजामीन डिजराइली, 1986, ए स्टडीज इन ग्लोबलाइजेषनः इंटरनल एण्ड इंटरनेषनल माइग्रेसन इन इंडिया, दिल्ली मनोहर पब्लिकेसन।

7 बेसरा, बासुदेव, 1973, ए प्रोग्राम फोर रिसर्च ऑन मैनेजमेंट इनफॉरमेंषन सिस्टम, मैनेजमेंट साइंस।

8 बुकानन, फ्रांसिस, 2009, जर्नल ऑफ द रैली एक्सआइएसएस पब्लिकेशन, मई 2009।

9 क्रिसमैन रिजले, 1996, अंडरस्टैंडिंग डेवलपमेंट, लाइन रियेनर, बाउल्डर।